ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

जनसंपर्क कार्यालय

PUBLIC RELATIONS OFFICE

आज़ादी का अमृत महोत्सव

वंदे मातरम् के उद्घोष ने समाज के प्रत्येक वर्ग तक स्वदेश की भावना पहुंचाई : प्रो. हिमांशु कुमार चतुर्वेदी

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ समापन

'वंदे मातरम् के सामाजिक एवं सांस्कृतिक अवबोध' पर हुआ सार्थक विमर्श

वर्धा, 26 फरवरी 2026: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय एवं भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन गुरुवार, 26 फरवरी को कस्तूरबा सभागार में हुआ। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि प्रो. हिमांशु कुमार चतुर्वेदी ने विषय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को रेखांकित करते हुए कहा कि भू-सांस्कृतिक यात्रा के क्रम में 'वंदे मातरम्' को कई बार खंडित रूप में प्रस्तुत किया गया। इसके उद्घोष ने समाज के प्रत्येक वर्ग तक स्वदेश की भावना पहुंचाई। उन्होंने कहा कि इस संगोष्ठी की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि यहां मूल स्रोतों के आधार पर चर्चा हुई और तथ्यों ने स्वयं अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। संगोष्ठी का विषय 'वंदे मातरम् के सामाजिक एवं सांस्कृतिक अवबोध' रहा, जबकि प्रदर्शनी 'वंदे मातरम् की सांगीतिक यात्रा' शीर्षक से आयोजित की गई जो अभी कुछ दिनों तक आयोजित रहेगी।

समापन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कुमुद शर्मा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में महाराज गंगा सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. मनोज दीक्षित उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान के निदेशक प्रो. हिमांशु कुमार चतुर्वेदी तथा सारस्वत अतिथि के रूप में वरिष्ठ संपादक, नई दिल्ली, श्री अनंत विजय की उपस्थिति रही।

श्री अनंत विजय ने अपने वक्तव्य में कहा कि विचार करना चाहिए कि उस कविता की क्या शक्ति है, जिसका पुनर्जागरण आज भी संभव है। 'वंदे मातरम्' की असंख्य धुनें बनीं और यह कई भाषाओं में रचा गया। उन्होंने कहा कि 'वंदे मातरम्' के समानांतर यदि कोई कृति व्यापक जनमानस में प्रतिष्ठित हुई है तो वह 'रामचरितमानस' है। बिना किसी हिंसात्मक आग्रह के इस गीत ने अंग्रेज़ी सत्ता को झुकने पर विवश किया। उन्होंने सिस्टर निवेदिता एवं सुरेंद्रनाथ बनर्जी द्वारा निर्मित ध्वजों का उल्लेख करते हुए कहा कि इस कविता ने स्वाधीनता आंदोलन को आंतरिक ऊर्जा प्रदान की। मदनलाल धिंगरा द्वारा फांसी पर चढ़ते समय 'वंदे मातरम्' का उद्घोष इसका उदाहरण है।

मुख्य अतिथि प्रो. मनोज दीक्षित ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह संगोष्ठी ऐसे विषय पर केंद्रित रही जिसने सभी प्रतिभागियों को एक सूत्र में बांधे रखा। 'वंदे मातरम्' की यात्रा के इतने विविध संदर्भ हैं कि उन्हें एक पुस्तक में समेटना कठिन है। उन्होंने इस विषय को संकीर्ण धार्मिक

दृष्टि से ऊपर उठकर देखने की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि जब हम 'वंदे मातरम्' को समग्रता में सुनेंगे और समझेंगे, तभी उसके वास्तविक भाव तक पहुंच पाएंगे।

अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. कुमुद शर्मा ने संगोष्ठी की सार्थकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यहां उपस्थित सभी वक्ता प्रमाणिक तथ्यों के साथ आए थे। इतिहास में जब किसी प्रसंग को लेकर विवाद उत्पन्न होता है, तो प्रमाण की अपेक्षा की जाती है। यह संगोष्ठी और प्रदर्शनी स्वयं में एक प्रमाण के रूप में स्थापित हुई है। 'वंदे मातरम्' के साथ समय-समय पर जो घटनाक्रम जुड़े, वे इस आयोजन के माध्यम से सामने आए। उन्होंने कहा कि 'वंदे मातरम्' हमारे संवेदन और चेतना का अभिन्न हिस्सा होना चाहिए तथा इसकी प्रेरणा से अनेक लोकगीतों का सृजन हुआ है।

सत्र में स्वागत वक्तव्य प्रो. अवधेश कुमार ने प्रस्तुत किया। डॉ. ओमप्रकाश भारती ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संचालन डॉ. यशार्थ मंजुल ने किया। दो दिनों तक चले इस आयोजन में 'वंदे मातरम्' के साहित्यिक, सामाजिक, सांगीतिक और सांस्कृतिक पक्षों पर गंभीर एवं बहुआयामी विमर्श हुआ। प्रदर्शनी के माध्यम से गीत की ऐतिहासिक और सांगीतिक यात्रा को सजीव रूप में प्रस्तुत किया गया। विचार-विमर्श, संवाद और सांस्कृतिक प्रस्तुति के साथ यह दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं प्रदर्शनी सफलतापूर्वक संपन्न हुई।

मराठी :

'वंदे मातरम्'च्या घोषणेने समाजाच्या प्रत्येक घटकापर्यंत स्वदेशभावना पोहोचवली : प्रो. हिमांशु कुमार चतुर्वेदी

दोन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठीचा समारोप

'वंदे मातरम्'च्या सामाजिक व सांस्कृतिक आकलन विषयावरील राष्ट्रीय चर्चा सत्राचा समारोप

वर्धा, २६ फेब्रुवारी २०२६ : महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय आणि भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान यांच्या संयुक्त विद्यमाने आयोजित दोन दिवसीय राष्ट्रीय चर्चासत्राचा समारोप गुरुवारी, २६ फेब्रुवारी रोजी कस्तुरबा सभागृहात झाला. या वेळी विशेष अतिथी प्रो. हिमांशु कुमार चतुर्वेदी यांनी विषयाची ऐतिहासिक पार्श्वभूमी स्पष्ट करताना म्हणाले की, भू-सांस्कृतिक प्रवासाच्या प्रक्रियेत 'वंदे मातरम्' अनेकदा खंडित स्वरूपात मांडले गेले. मात्र, या घोषणेने समाजातील प्रत्येक घटकापर्यंत स्वदेशभावना पोहोचवली. चर्चासत्राचा विषय 'वंदे

मातरम्'चे सामाजिक व सांस्कृतिक आकलन' असा होता, तर 'वंदे मातरम्'ची सांगीतिक यात्रा' या शीर्षकाखाली प्रदर्शनीही आयोजित करण्यात आली असून ती पुढील काही दिवस सुरू राहणार आहे.

समारोप सत्राची अध्यक्षता विद्यापीठाच्या कुलगुरू प्रो. कुमुद शर्मा यांनी केली. प्रमुख अतिथी म्हणून महाराज गंगा सिंह विश्वविद्यालय चे कुलगुरू प्रो. मनोज दीक्षित उपस्थित होते. विशेष अतिथी म्हणून भारतीय उच्च अध्ययन संस्थानचे संचालक प्रो. हिमांशु कुमार चतुर्वेदी तसेच सारस्वत अतिथी म्हणून नवी दिल्ली येथील ज्येष्ठ संपादक श्री अनंत विजय उपस्थित होते.

श्री अनंत विजय म्हणाले की, ज्या कवितेचे पुनर्जागरण आजही शक्य आहे, तिच्यातील शक्तीचा आपण विचार केला पाहिजे. 'वंदे मातरम्'च्या असंख्य चाली रचल्या गेल्या असून ते अनेक भाषांमध्ये साकारले गेले आहे. 'वंदे मातरम्'च्या बरोबरीने व्यापक जनमानसात प्रतिष्ठा मिळवलेली दुसरी कृति म्हणजे रामचरितमानस होय, असे त्यांनी नमूद केले. कोणताही हिंसात्मक आग्रह न धरता या गीताने इंग्रजी सत्तेला झुकण्यास भाग पाडले.

प्रमुख अतिथी प्रो. मनोज दीक्षित म्हणाले की 'वंदे मातरम्'ची वाटचाल इतक्या विविध संदर्भांनी समृद्ध आहे की ती एका पुस्तकात सामावणे कठीण आहे. या विषयाकडे संकुचित धार्मिक दृष्टीकोनातून न पाहता व्यापकतेने पाहण्याची गरज त्यांनी अधोरेखित केली. 'वंदे मातरम्'ला समग्रतेने ऐकले आणि समजून घेतले तरच त्याच्या खऱ्या भावार्थापर्यंत पोहोचता येईल, असे ते म्हणाले.

अध्यक्षीय भाषणात प्रो. कुमुद शर्मा यांनी चर्चासत्राच्या सार्थकतेवर प्रकाश टाकताना सांगितले की सर्व वक्ते प्रमाणाधारित तथ्यांसह सहभागी झाले होते. इतिहासात एखाद्या प्रसंगावर वाद निर्माण झाल्यास पुराव्यांची अपेक्षा असते. 'वंदे मातरम्'शी संबंधित विविध ऐतिहासिक घटना या आयोजनातून पुढे आल्या. 'वंदे मातरम्' आपल्या संवेदना आणि चेतनेचा अविभाज्य भाग असावा, तसेच त्यातून अनेक लोकगीतांची प्रेरणा मिळाली आहे, असे त्यांनी नमूद केले.

सत्रात स्वागतपर भाषण प्रो. अवधेश कुमार यांनी केले. डॉ. ओमप्रकाश भारती यांनी आभार प्रदर्शन केले, तर डॉ. यशार्थ मंजुल यांनी संचालन केले. दोन दिवस चाललेल्या या कार्यक्रमात 'वंदे मातरम्'च्या साहित्यिक, सामाजिक, सांगीतिक आणि सांस्कृतिक पैलूंवर गंभीर आणि बहुआयामी चर्चा झाली. प्रदर्शनाच्या माध्यमातून गीताचा ऐतिहासिक आणि सांगीतिक प्रवास जिवंत स्वरूपात सादर करण्यात आला. विचारमंथन, संवाद आणि सांस्कृतिक सादरीकरणांसह चर्चासत्र यशस्वीपणे संपन्न झाले.

नमस्कार !

मा. संपादक/संवाददाता महोदय, कृपया संलग्न समाचार को प्रकाशित कर अनुगृहीत करने का कष्ट करें।

सादर धन्यवाद।